वास्तविकता को सच बनाना

रोमियों छः का अध्ययन

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

यशायाह 5:13 "मेरी प्रजा के लोग अपनी अज्ञानता के कारण *बन्धूवाई में जाते हैं।"

- *शब्द का अर्थ है : उघाड़ना, विशेषकर लज्जाजनक भाव में ; आशय है कि , बन्धूवाई में ले जा कर बन्दियों को अकसर नंगा किया जाना। (उदाहरण : यशायाह 20:4)

- हमारी ''अज्ञानता'' शैतान का अवसर देती है कि वह हमें बन्धूवाई में ले जाए और हमें लज्जित और अपमानित प्रदर्शित करें।

- जिसका हमें ज्ञान नहीं है वो हमें चोट पहुंचा सकता है/ कीमती पड़ सकता है/ परेशान कर सकता है तथा हमें बेड़ियों में जकड़ सकता है।

2 कुरिन्थियों 2:11 "कि शैतान हमसे कोई लाभ न उठाए, क्योंकि हम उनकी युक्तियों से अनजान नहीं हैं।"

- परमेश्वर के राज्य से बाहर आप को बन्दी बनाने और बन्धूवाई में ले जाने में तथा आपकी नग्नता को प्रदर्शित करने में शैतान को आनन्द आता है, जैसा उसने आदम और हव्वा के साथ किया था। (उत्पत्ति 3:7)

उत्पत्ति 2:16–17 फिर यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह कह कर आज्ञा दी : "तू वाटिका के किसी भी पेड़ का फल बेखटके खा सकता है, 17 जो भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष है – उसमें से कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसमें से खाएगा उसी दिन तू अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति 3:4–7 तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे!"

- वह कौन है जो सच हम से छिपाता है ??? हमसे झूठ बोलता है, ताकि हमें मूर्खों की तरह, विश्वास करें?

5 "परमेश्वर तो जानता है कि जिस दिन तुम उसमें से खाओगे, तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी और तुम भले और बुरे का ज्ञान पा कर परमेश्वर के समान हो जाओगे।"

- परमेश्वर कभी नहीं चाहता था कि हम बुराई जानें, केवल भलाई

6 जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, आंखों के लिए लुभावना, तथा बुद्धिमान बनाने के लिए चाहने योग्य है,

- परमेश्वर के वचन से आए ज्ञान को अस्वीकार कर दिया गया, परन्तु जो उस स्त्री ने उस दुष्ट के द्वारा **देखा** और **सुना** उसे स्वीकार कर लिया।

- आज कल लोग यही करते है और उस**ी** ज्ञान को ढंढते है जिसे **वे देख** और **सुन** सकते हैं। **वे प**रमेश्वर या उसके वचन की ओर देखते नहीं या उसे अस्वीकार कर देते हैं।

तो उसने उसका फल तोड़कर खाया, और साथ ही साथ अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। (एक छोटी से अवज्ञाकारिता का परिणाम बहुत कठिन और सख्त हो सकता है) 7 तब उन दोनो की आंखे खुल गई और उन्हें मालुम हुआ कि हम तो नंगे हैं। और उन्हों ने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर अपने लिए लंगोट बना ली।

- उन्हें वाटिका से बाहर निर्वासन में ले जाया गया। हमारी परमेश्वर के वचन के प्रति अवज्ञाकारिता और अज्ञानता का परिणाम कठिनाई का जीवन हो जाता है – ''कांटे और ऊंटकटारे'', तथा ''माथे का पसीना''।

- शैतान ने उन्हें अपमानित किया, नग्न किया और उघाड़ दिया। उसको हमें मूर्ख बनाने में आनन्द आता है और जब वह हमें अपनी असफलताओं को, अपनी शर्म को, अंजीर के पत्तों जैसे व्यर्थ ''अज्ञानता'' से छिपाते देखता होगा शायद हंसता भी हो।

- कितनी ही बार हम अपने अंजीर के पत्ते ले कर – अपनी गलतियों को ढांपते हैं, रक्षा करते हैं।

❖ हम सभी या तो सत्य या फिर अंजीर के पत्तों के साथ घिरे खड़े हुए हैं।

होशे 4:6 ''अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा *नाश हो जाती है।''

- *इब्रानी शब्द का अर्थ : मूढ़ या मौन हो जाना, तबाह हो जाना, छोटा हो जाना, असफल या नष्ट हो जाना, विनाश।

- जो आप नहीं जानते (मूढ़ होने के कारण) वो आप बहुत चोट पहुंचा सकता है। वह आपकी असफलता का , नुकसान उठाए जाने का और खोए हुए मौके की वजह हो सकती है।

उदाहरण :

❍ विदेश में जाने पर आप नहीं जानते कि कौन सी बस या कौन सा मार्ग लेना है तथा आपको वहां की भाषा भी बोलनी भी नहीं आती। बहुत से लोग, विशेषकर जवान, भीड़ के पीछे हो लेते हैं और किसी भी बस पर बिना उसका गन्तव्य जाने चढ़ जाते हैं। उदाहरणतः नशे, शराब, तम्बाकू, अश्लीलता, क्षमाहीनता, क्रोध और अन्य तरह की बस में।

- अगर आप बिजली के खतरे को जानते नहीं और आप नंगे तार को पकड़ लेते हैं। यह मूढ़ता है।

- पानी में डूबे लट्ठे को अनदेखा करते हुए, यह सोचते हुए नदी में छलांग लगा देना कि पानी ज़्यादा गहरा नहीं हैं।

- जबकि हमारा कैंसर का स्तर और दूसरी स्वास्थ्य समस्याएं अन्य देशों की तुलना में बढ़ रहीं हैं, ऐसे समय यह सोचना कि ''फास्ट फूड'' भोजन, चीनी और वसा युक्त भोजन तथा कीटनाश्क का प्रयोग सुरक्षित है।

जिसे कुछ लोग सच्चाई कहते हैं सदा सच नहीं होता।

कुछ ''सत्य'' हमारे समझ के अनुसार होते है – हमारे दृष्टिकोण से

मनुष्य के समझ के उदाहरण

(इंद्रियों के द्वारा, विशेषकर देखने और सुनने के द्वारा बोध) :

- पहले ऐसा सोचा जाता था कि पृथ्वी चपटी है और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है। 17वी शताब्दी में गैलीलियो ने अपनी दूरबीन के द्वारा यह खोज की कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है जो उस समय के स्वीकृत सत्य के विरोध में था।

  कैथोलिक चर्च ने उसे जीवन काल के लिए बन्दीगृह में डाल दिया क्योंकि इसने उनके सत्य की समझ को चुनौती दी थी।

- एक छोटे से कण में से सब कुछ उत्पन्न हुआ और करोड़ों वर्षों में विकास हुआ। इसे ''विकास के सिद्धान्त'' के रुप में जाना जाता है।

- 17वीं शताब्दी में ''प्लेग'' से यूरोप में हज़ारों लोग मारे गए। उनकी समझ के अनुसार यह हवा में था और इसलिए उन्हों ने अपनी सारी खिड़कियां और चिमनियां बन्द कर दी। यह गलत था! यह चूहों से फैलता था।

- मनुष्य की ''समझ'' ने अनेक सिद्धान्तों को जन्म दिया जो समय-समय पर झूठ ठहराए गए।

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व, लोग और वैज्ञानिक यह मानते थे कि साधारण जीव सहज उत्पत्ति के द्वारा अस्तित्व में आ सकते हैं। उनके विचार में निंजीव वस्तु जीवन्त जीव उत्पन्न कर सकता है। उनके विचार में साधारण जैसे कीड़े, टिड्डी, मेंढक और समुद्री जन्तु आदि, धूल और मिट्टी से आए तथा इसी प्रकार खाने की सड़ गई वस्तुओं से मक्खीयां उत्पन्न हुई।

उदाहरणतः
अवलोकन : प्रत्येक बसन्त ऋतु में, मिस्र की नील नदी के किनारे के क्षेत्रों में पानी भर जाता है और उस वर्ष की फसल के लिए अपने पीछे पोषक मिट्टी छूट जाती है। लेकिन, कीचड़ मिट्टी के साथ बहुत से मेंढक आ जाते हैं जो सूखे समय में नहीं थे। **समझ** : ऐसा लगना बिलकुल स्वाभाविक था कि मेंढक कीचड़ में से पैदा हुए। यह गलत था !

अवलोकन : मध्य युग में यूरोप के किसान ऐसे खत्तों में अनाज रखते थे जिनके छप्परों से पानी रिसता था। इस कारण अनाज खराब हो जाता था और बहुत चूहे आ जाते थे। समझ : ऐसा लगना बिलकुल स्वाभाविक था कि चूहे पुराने और सड़े हुए अनाज से पैदा हुए हैं। यह गलत था।

आज विकासवादी सिद्धान्तवादियों के दिमाग में सहज उत्पत्ति के विचार हैं जो यह समझाते हैं कि मनुष्य ने करोड़ों वर्ष पहले निर्जीव रसायनों के सम्पर्क में आ कर अपना क्रमबद्ध विकास आरम्भ किया। अथवा , निर्जीव वस्तुएं जीवित प्राणियों को उत्पन्न कर सकते हैं। यह गलत है !

जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर सत्य कहे वह यकीनन सच है।

वस्तुओं के लिए उसका ज्ञान, उसका दृष्टिकोण 'सही है' ।

- यूहन्ना 1:1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था, देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

- यीशु ने पिलातुस से कहा : ''मैं इसलिए इस संसार में आया हूं कि सत्य की साक्षी दूं। प्रत्येक जो सत्य का है मेरी वाणी सुनता है।'' पिलातुस ने उससे कहा, ''सत्य क्या है?'' यूहन्ना 18:37–38 ।।

  यह अच्छा प्रश्न है। हिन्दू कहता हैं ''यह सत्य है।'' इस्लाम कहता है ''यह सत्य है।'' सिख ... जैन ... और इस प्रकार अन्य

- यीशु ने कहा : ''मार्ग, **सत्य** और जीवन मैं ही हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। यूहन्ना 14:6

- ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे, और तुम **सत्य** को जानोगे और **सत्य तुमको स्वतन्त्र करेगा**। यूहन्ना 8:31–32 ।।

- इस कारण यह पहिचाना अत्यावश्यक है कि इस संसार के ''पण्डित'' जो सत्य जानने का दावा करते हैं, हमारे वैज्ञानिक और विशेषज्ञ जो अपने पास तथ्य होने का दावा करते हैं, वे अपनी छोटी और निम्न श्रेणी की समझ से देख रहे हैं तथा वे हमेशा सही नहीं होते। वे प्रशन के अधीन हैं।

- कई बार उनका दर्शन उनके ''अंजीर के पत्तों'' से रुक जाता है।

- जब वे दृढ़ता पूर्वक से परमेश्वर के अस्तित्व का और उसके खूबसुरत प्रयोजन का इनकार करते हैं तथा बलपूर्वक अपने विकासवादी सिद्धान्त को बढ़ावा देते हैं तो उनका ''अंजीर का पत्ता'' प्रदर्शित होता है। देखें : रोमियों 1:18–25 ।।

इसलिए हमें चाहिए : (रोमियों 12:2)

अतः हमें सत्य को जानने और वास्तविकता को अपने जीवन में सच करते हुए''अपने मन के नए हो जाने'' पर काम करना चाहिए।

रोमियों 6 से सत्य

रोमियों 6 में हम बहुत आवश्यक सत्य को सीखते हैं जो हमारी सहायता करता है कि हम पाप से मुक्त और पाप पर विजयी जीवन जीएं।

रोमियों 6:1 तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह अधिक होता जाए?

- अब यह मूढ़ता है! 'अंजीर के पत्ते' की समझ से प्राप्त निष्कर्ष।

- पौलुस उन लोगों के तर्क का जिक्र कर रहा है जो कहते हैं ''हमें पाप बन्द करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि जहां पाप बढ़ता है वहां अनुग्रह भी और अधिक बढ़ता है।'' जो पौलुस ने रोमियों 5:20–21 में कहा उसका गलत अर्थ समझना।

(2) कद्यापि नहीं! हम जो पाप के लिए मर गए फिर उस में कैसे जीवन व्यतीत करें?

क्या? ''पाप के लिए मरना'' मैं मरा? कब? क्यों मैं अब भी यह काम करता हूं?

(3) क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया ?

→ 'बपतिस्मा' शब्द का शाब्दिक अर्थ ''डाल देना'' या ''किसी में रख देना'' है।

और, यदि हम ''मसीह में'' हैं , तो प्रभु परमेश्वर यह देखता है कि :

1. जो यीशु है, हम भी हैं।

और

2. जो कुछ मसीह के साथ होता है वही हमारे साथ भी हो।

यह वो है जिसे हमें जानना चाहिए :

- जब हम ''बपतिस्मा'' शब्द को देखते हैं तो हमें तुरन्त पानी का नहीं सोचना चाहिए। इस अनुच्छेद में पानी का कोई ज़िक्र नहीं है।

- केवल पानी के साथ बपतिस्मे के शब्द के जुड़ने का आरम्भ इसलिए हुआ क्योंकि युनानी शब्द ''बपतिज़ो'' का अनुवाद दूसरी भाषाओं में करने की बजाय इसे ऐसे ही ले लिया था। कहने का तात्पर्य यह है – इस शब्द के अर्थ को न लेते हुए इस युनानी शब्द को ही ले लिया।

- बपतिज़ो – का शब्दिक अनुवाद है : डाल देना; गोता लगाना, डुबा देना, जलमग्न हो जाना (जहाज़ का डूबना, कपड़े को रंगना, इत्यादि)। (युनानी शब्दकोश से) माध्यम पानी हो सकता है, परन्तु हमेशा नहीं।

- यदि युनानी शब्द 'बपतिज़ों' का अनुवाद किया जाता तो हम अपनी बाइबल में बपतिस्मा की बजाय ''डाल दिया'' पढ़ते।

- पूर्वसर्ग 'ईज़' (εἰς) यह उस चीज़ की ओर संकेत करता है जिसमें विषय डाला गया है : तथा रोमियों 6:3 में हम ''मसीह मे '' और ''उसकी मृत्यु में'' डाल दिए गए हैं।

- इसी प्रकार ἐν (युनानी) के लिए भी यह सच है – एक पूर्वसर्ग जो स्थान, समय या अवस्था में स्थिति को बताती है।

  - प्रेरितों के काम 1:5 यूहन्ना ने तो जल में (ἐν) बपतिस्मा दिया, परन्तु अब से थोड़ें दिनों के पश्चात तुम पवित्र आत्मा में (ἐν) बपतिस्मा पाओगे। जिस प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने लूका 3:16 में कहा था।

- मरकुस 10:38 जो प्याला मैं पीने पर हूं क्या तुम पी सकते हो? या जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या तुम ले सकते हो?
  - प्याला उसकी मृत्यु और बपतिस्मे की ओर संकेत करता है जो उसकी मृत्यु में है।

- 1 कुरिन्थियों 10:2 सब ने उस बादल और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया।
  - मूसा को उनका अगुवा/बचाने वाला कर के रखा। जहां वह गया वहां वे भी गए।

- 1 कुरिन्थियों 12:13 क्योंकि हम सब ने , चाहे यहूदी हो या युनानी, दास हो या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया, और हमें एक ही आत्मा पिलाया गया।
  - मसीह की देह में डाल दिए गए।

- गलातियों 3:27 तुम में से जितनो ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।

- कुलुस्सियों 1:2 मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाईयों को जो कुलुस्से में रहते हैं।

- प्रभु परमेश्वर हर एक व्यक्ति को या तो **"आदम में"** या **"मसीह में"** देखता है। जिस प्रकार आदम में(ἐν) सब मरते हैं उसी प्रकार मसीह में(ἐν) सब जिलाए जाएंगे। (1 कुरिन्थियों 15:22)

इसलिए जब भी हम "बपतिस्मा" के शब्द को देखें तो हमें तुरन्त पानी का नहीं सोचना चाहिए। इस शब्द का प्रयोग समान रुप से दूसरे माध्यम "में डाल देने" के लिए भी हुआ है।

(4) इसलिए हम बपतिस्मा द्वारा उसकी मृत्यु में सहभागी हो कर उसके साथ गाड़े गए हैं, जिससे कि पिता की महिमा के द्वारा जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम भी जीवन की नई चाल चलें।

- यीशु का लहू – जो भी हमने **किया** है उसे क्षमा करता है।

- यीशु मरा – हम मरे! जो हम हैं उसका ख्याल किया : पापी

- यीशु गाड़ा गया – हम भी गाड़ दिए गए! समाप्त!

- यीशु मरे हुओं में से जिलाया गया – हमें भी मरे हुओं में से जिलाया गया। **यह "नया जन्म" है।**

  1 पतरस 1:3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया।

- ताकि अब : हम भी जीवन की नई चाल चलें।

→ चलें – विषय क्रिया करता है।

मुझे करना ही है।

क्रिया आश्रित है

यह मुझ पर निर्भर है।

→ हमारे पास जीवन की नई चाल चलने का विकल्प है।

यदि हम चाहें और यदि हम करते हैं।

(5) क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी एक हो जाएंगे।

→ जीवन की नई चाल चलना

➔ सम्भव है !

इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं। देखो, नई बातें आ गई हैं।
2 कुरिन्थियों 5:17 ।।

पहला कदम – सत्य को जानें

(6) यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, कि(इस उद्देश्य से) हमारा पाप का शरीर भी निष्क्रिय हो जाए, कि हम आगे से पाप के दास न रहें।

यह परमेश्वर और उसके वचन का सत्य है जो ''ज्ञान के वृक्ष'' के विरोधाभास में है – मनुष्य की समझ, जिसके द्वारा वह देख और छू सकता है और अपने अंजीर के पत्ते के द्वारा समझ सकता है।

यह जानते हुए :

→ ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया''। यह सच है।

- निश्चित भूत काल – जो भूत काल में किसी निश्चित समय पर हुआ।

  - जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, आप भी चढ़ाए गए।

- कर्मवाच्य – विषय : ''हमारा पुराना मनुष्यत्व'', क्रूस पर चढ़ाए जाने की क्रिया को प्राप्त किया। मैंने उसे पाने के लिए कुछ नहीं किया। यह सच है

क्यों?

ताकि(इस उद्देश्य से)

→ हमारा पाप का शरीर भी निष्क्रिय हो <u>जाए</u>

- ''हो जाए'' मेरी क्रिया पर निर्भर है !

इस सत्य को, इस वास्तविकता को मेरे जीवन में सच बनाने के लिए यह मुझ पर आश्रित है।

यीशु ने अपनी मृत्यु और लहू बहाए जाने के द्वारा मेरे पाप क्षमा किए तथा उसी कारण मैं पापों के **दण्ड** (मृत्यु) से **स्वतन्त्र** हूं और मुझे अनन्त जीवन प्राप्त है। यह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा हर एक विश्वासी के लिए पूरी और सम्पूर्ण सच्चाई है।

परन्तु अब रोमियों छः हमें बता रहा है कि हम अपने प्रतिदिन के जीवन में कैसे पाप की शक्ति से मुक्त रह सकते हैं।

यह हमारे उद्धार का भाग है जिसे हमें ''पूरा करते जाना'' है। (फिलिप्पियों 2:12)

पहला कदम : इस सत्य को जानना है

(7) क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूट कर **निर्दोष** ठहरा।

यह सच है

- यह **पाप की शक्ति** से मेरा छुटकारा और उस पर मेरी **विजय** है !

- क्या आपने किसी मरे हुए व्यक्ति को पाप करते देखा है? आप उसे लात-घूंसे मारें, उस पर पत्थर फेंकें, बुरा-भला कहें, या कुछ भी करें – आपको उससे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलेगी। वह पाप के लिए मर गया है।

(8) अब यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हम विश्वास करते हैं कि उसके साथ जीवित भी रहेंगे।

यह सच है / वास्तविकता है / अनन्त सत्य है

(9) यह जानते हुए कि मसीह मृतको में से जिलाया जा कर फिर कभी मरने का नहीं, न अब उस पर मृत्यु की प्रभुता है।

पाप और मृत्यु की सामर्थ पर उसकी विजय ही पाप और मृत्य की सामर्थ से मेरा छुटकारा और उस पर मेरी विजय है। मेरा बपतिस्मा हुआ, उसमें रख दिया गया। अब जो उसके साथ होगा वो मेरे साथ होगा।

- **आप मरेंगे नहीं। मृत्यु अब आप पर प्रभुत्व नहीं करेगी।**

(10) क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।

दूसरा कदम : वास्तविकता को अपने जीवन में सच बनाना !

(11) ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित **समझो**।

''समझो''– एक आदेशात्मक भाव है – एक आज्ञा ! यह युनानी भाषा में 'हिसाब–किताब' के लिए प्रयोग में लिए जाने वाला शब्द है जिसका अर्थ : किसी चीज़ की सूची बनाना, सत्य को जानना, तथ्य के निष्कर्ष पर पहुंचना।

- उन सब का हिसाब जो पहले हो चुका है।
- सत्य जानना / उस पर विश्वास करना ताकि आप उस पर निर्भर रह सकें, भरोसा कर सकें।
- लिख लें /लागु करें / दृढ़ से उस पर डटे रहें / उस पर काम करें /
- एक बार और हमेशा के लिए निपटा दें।
- यह अन्तिम शब्द है – विश्वास करें!

इब्रनियों 11:1–2 ''अब **विश्वास** तो आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय(तत्व या आधार) , और **अनदेखी वस्तुओं** का **प्रमाण** है।

- प्रमाण वह है जो परमेश्वर के अनन्तकाल के दृष्टिकोण से सत्य है न कि अंजीर के पत्तों के द्वारा देखने या समझने वाले मेरे दृष्टिकोण आधारित ।

विश्वास वास्तवकिता को हमारे जीवन में **सच** बना देता है। यह सत्य है चाहे मैं विश्वास करुं या न करुं। परन्तु विश्वास इन सच्चाईयों, सत्य को मेरे जीवन में सच बनाता है।

(12) इसलिये – पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य **न करे**, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो।

- आप को कार्यवाही करनी है। यह आप पर अचानक आ सकती है।

- पौलुस हमें कहता है :

  (1) पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो (इफि 4:22) [जो उसके साथ क्रूसित हुआ] मरे हुए पुराने मनुष्य को उतार डालो! वह बदबूदार है! जो भी कुछ वह करता है उसमें से सड़ाहट आती है!

  (2) और नए मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुरुप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। (4:24) और शैतान को अवसर नहीं देता। (4:27)

  "जैसे मसीह जिलाया गया था, वैसे हम भी जीवन की नई चाल चलें।"

1यूहन्ना 3:9 "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है।"

- यह कि मुझ में "परमेश्वर से उत्पन्न", "नया मनुष्य" पाप नहीं कर सकता।

1 यूहन्ना 5:18 हम जानते है कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता; परन्तु वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

- यह आपका चुनाव है। जिसे आप सत्य मानते हैं उस पर आपको निर्णय लेना है और उसे लागु करना है। **पाप को प्रभुता न करने दें!**

  - याकूब 1:22 परन्तु अपने आपको वचन पर चलने वाले प्रमाणित करो, न कि केवल सुनने वाले जो स्वयं को धोखा देते हैं।

- याकूब 2:17 वैसे ही विश्वास भी, यदि उसके साथ कार्य न हो, तो अपने आप में मृतक है।

- मत्ती 7:24 इसलिए जो कोई मेरे इन वचनों को सुन कर उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।

इसी प्रकार हम गलातियों 5:17 का युद्ध जीत सकते हैं: "क्योंकि शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है। यह तो एक दूसरे के विरोधी हैं, कि जो तुम करना चाहते हो उसे न कर सको।"

(13 अ) और **न** (आदेशात्मक क्रिया) अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को **सौंपो,**

- परमेश्वर ने अपना कार्य कर दिया है, हमारे लिए पूरा कर दिया है।

- हमें अपना कार्य करना है और सत्य को अपने जीवन में वास्तविकता बनाना है।

- इस पर विचार करें ! इसे समझें ! इस पर निर्भर रहें !

- पौलुस इस सच को जानता था – उसने अपने जीवन में इसे समझा/इसे माना।

गलातियों 2:20 "**मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं**। अब **मैं जीवित न रहा,** परन्तु **मसीह मुझ में जीवित है,** और अब मैं जो शरीर में जीवित हूं, तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।"

- गलातियों 2:20 को कंठस्थ करें
- जब भी आप को क्रोध आए/रक्षात्मक स्थिति में हों/अक्षमाशीलता हों ; तुरन्त वहीं रुकें और गलातियों 2:20 को अपनी किसी और प्रतिक्रिया से पहिले दोहराएं। "मैं मर गया" क्या आपने किसी मुरदे को पाप करते देखा है? "**मसीह मुझ में जीवित है**" उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी?
- यीशु की प्रतिक्रिया यह थी :

1 पतरस 2:21–25 तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए एक आर्दश रखा कि तुम भी उसके पद – चिन्हों पर चलो। उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। (23) उसने गाली सुनते हुए गाली नहीं दी, दुख सहते हुए धमकियां नहीं दीं, पर अपने आप को उसके हाथ सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है। (24) उसने स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया, जिससे हम पाप के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें, क्योंकि उसके घावों से तुम स्वस्थ हुए हो।

तथा जब वे उसके हाथों में कीलें ठोक रहे थे, वह उनके लिए प्रार्थना कर रहा था :
"हे पिता, इन्हें क्षमा कर" लूका 23:34

तीसरा कदम

(13 ब) पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमश्वर को **सौंपो,** और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।

- सौंपो – अपने आप को सामने ला कर दे देना या समर्पित कर देना।
- दो विकल्पः (1) अपने आप को पाप के लिए सौंप देना, अधर्मिकता के लिए, या (2) अपने आप को प्रभु यीशु मसीह और धार्मिकता के लिए सौंप देना।
- अपने आप को यीशु को दे दो। एक बार भेंट दे देना और फिर वापस लेना चोरी है।

  ''तुम अपने नहीं हो, क्योंकि तुम मुल्य देकर खरीदे गए हो ; इसलिए अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' (1 कुरिन्थियों 6:19–20)

- अपने आप को सत्य को सौंप दो (यूहन्ना 14:6)।
- ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे चले।'' (मत्ती 16:24)

इस प्रकार आप अपने आपको परमेश्वर को सौंप सकते हो :

➔ अपना क्रूस उठा कर उसके पीछे चलें।

(14) और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो।

- व्यवस्था पाप का बढ़ा देती है। रोमियों 7:4–11
- परमेश्वर का अनुग्रह पाप न करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ है। (2 कुरिन्थियों 12:9)
- परमेश्वर के अनुग्रह की मात्रा जिसे आप पाप का सामना करने में लगाते या प्रयोग करते हैं तथा परमेश्वर की आज्ञा को मानना, आप पर निर्भर है (1 कुरिन्थियों 15:10)। उसके अनुग्रह को व्यर्थ में प्राप्त न करें।

(15) तो क्या हुआ ? क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हैं ? कदापि नहीं।

(16) क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम **अपने आप को** दासों की नाईं **सौंप** देते हो, **उसी के दास होः और जिस की मानते हो**, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है ?

- ''सौंप देने'' का यही अभिप्राय है – यदि आप वास्तव में अपने आप को किसी को सौंप देते हैं, तो आप उनकी इच्छा से कार्य करने के लिए उनके हैं।

जब गलीली बालक ने अपनी रोटी प्रभु को सौंपी, तब प्रभु ने उस रोटी के साथ क्या किया? केवल जब उस रोटी को आशीष मांग कर तोड़ा गया उसने अनेकों की ज़रुरतों को पूरा किया।

- रोमियों 12:1 "अतः हे भाईयों, मैं परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम अपने शरीरों को जीवित पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान कर के परमेश्वर को समर्पित कर दो। यहीं तुम्हारी आत्मिक आराधना है।

(17) परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी **मन से** उस उपदेश के **माननेवाले** हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे।

- आप अपने आप को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए सौंप रहे हैं।

(18) और **पाप से छुडाए जाकर** धर्म के दास हो गए।

(19) मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगो को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके **सौंपा** था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो।

(20) जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे।

(21) सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे ? क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है।

(22) परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।

(23) क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।।

सत्य को जानना

अपने जीवन में इस पर विचार करें / समझें। इस पर स्थिर रहें।

अपने आप को सौंप दें / प्रभु यीशु मसीह के लिए अपने आप को पूर्णतः दे दें

अपना क्रूस उठा कर प्रभु यीशु मसीह के पीछे हो लें।

क्योंकि **मसीह का प्रेम हमें विवश करता है** जिस से यह निष्कर्ष निकलता है कि जब **एक सब के लिए मरा,** तो **सब मर गए** और वह सब के लिए मरा कि **वे जो जीवित हैं आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जीएं,** जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा। 2 कुरिन्थियों 5:14–15